P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

समाज में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन (लखीमपुर –खीरी) भाहर में हिन्दू और मुस्लिम महिलाओं के सन्दर्भ में

रेनू शुक्ला
प्रवक्ता,
गृह विज्ञान विभाग,
स्व. यशोदा कन्या महाविद्यालय,
मिश्रित, सीतापुर (उ. प्र.)
भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में समाज में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन शहर में हिन्दू और मुस्लिम महिलाओं के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु लखीमपुर खीरी शहर की 120 महिलाओं (60 हिन्दू तथा 60 मुस्लिम महिलाएँ) का चयन उदेश्यपूर्ण निदर्शन के द्वारा किया गया है।अध्ययन में साक्षात्कार अनूसुची का निर्माण कर विश्लेषण कर किया गया ह। औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों प्रकार के साक्षात्कार के माध्यम से, तथ्यों का संकलन किया गया है। व्याख्यात्मक, अनुमानिक सांख्यिकी के परिणामों के आधार से स्पष्ट हुआ है, कि समाज में हिन्दू महिलाओं की स्थिति तथा मुस्लिम महिलाओं की स्थिति में अंतर नहीं पाया जाता है।

मुख्य शब्द : राष्ट्र, हिन्दू, मुस्लिम, महिला, समाज, लखीमपुर, शोध, सांख्यिकी आदि।

प्रस्तावना

राष्ट्र के निर्माण में स्त्रियों का योगदान बहुत महत्व रखता है, लेकिन राष्ट्र की आर्थिक प्रगति और विकास में स्त्रियों की शक्ति की ओर उचित ध्यान देनें की जरूरत है, इस शक्ति को इस तरह उपयोग करने की जरूरत है, जिससे की खुद स्त्रियों को अधिक से अधिक फायदा हो ओर साथ ही राष्ट्र के विकास और आर्थिक प्रगति के मामलें में अधिक से अधिक फायदा उठाया जा सकें। यह तभी सम्भव होगा, जब स्त्रियों को सम्मान दिया जाये और उनको समझदारी के साथ नियत्रित किया जाये और साथ ही उनकी शक्ति को राष्ट्र के लाभ के लिए और स्त्रियों का दर्जा ऊँचा उठानें के लिए सही रास्तों पर लगाया जाये।

डा. राधाकृष्ण ने अपने ग्रन्थ ''द हिन्दू व्यू ऑफ लाइफ'' में जो लंदन से 1957 में प्रकाशित हुयी थी, मैंनें भारतीय महिलाओं के बारें में विचार करते हुए लिखा है कि, ''शताब्दियों से चली आ रही परम्पराओं में नारी को विश्व में सर्वाधिक, निस्वार्थी, आत्मत्यागी, सर्वाधिक धैर्यवान बना दिया है कष्ट उठाना जिसका आत्मगौरव है।'' हालांकि यह ग्रन्थ हिन्दू जीवन दशाओं के बारें में लिखा गया है, परन्तु भारत में रहनें वाली मुस्लिम महिलाओं के संदर्भ में भी उतना ही सही है जितना कि हिन्दू समाज की महिलाओं के सम्बन्ध में ।

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के अनुसार, 147 देशों में सर्वे के अनुसार इन क्षेत्रों की महिलाएं खुद को मिलनें वाले स्वास्थ्य सुविधाओं से बहुत खुश ह। जहाँ तक का सवाल है, यहाँ स्थिति को फिफ्टी–फिफ्टी माना जा सकता है। देश में स्कूल जाने वाली बच्चियों की संख्या बढ़ी है, नौकरियों में महिलाएं भी नजर आने लगी है यदि अलग बात है कि संसद और विधानसभाओं में महिलाओं को 33 फीसदी आरक्षण देने का मामला अब भी अटका हुआ है। यही वजह है कि भारतीय संसद में आज भी मात्र 11 फीसदी ही महिलाएं है। अगले लोकसभा चुनाव में अब महज 6 माह बचें है और कोई भी राजनीतिक दल इस मुद्दें को उठाने से बचना नजर आ रहा है।

15 जून 1904 कोभारत की तत्कालीन इंदिरा गाँधी ने अपने लेख में भारत की महिलाओं की दुर्दशा के लिए रूढ़िगत मान्यता को दोषी ठहराया है, वस्तुतः मुस्लिम महिलाओं के संदर्भ में उनका नजरिया बहुत कुछ सतय प्रतीत होता है

लेखिका अनीस जग द्वारा लिखित पुस्तक ''नाइट ऑफ द् न्यू मून'' में मुस्लिम महिलाओं के रहन–सहन, आचार–विचार एवं जीवन दशाओं का सूक्ष्मता

से विवेचन किया है उन्होनें मुस्लिम महिलाओं की दयनीय दशा के लिए अशिक्षा, मजहब, पस्ती, पर्दाप्रथा, रूढ़िवादिता आदि की प्रति को उत्तरदायी माना है। जैन मंजू 1994 के अनुसार आरक्षण समाज के कमजोर व दलित वर्ग के लिए होता है, यदि महिलाओं के लिये आरक्षण किया जाता है, तो संवैधानिक व कानूनी दृष्टि से भी महिला कमजोर सिद्ध हो जाती है, ऐसी स्थिति में समानता व अधिकारों का जो संघर्ष केवल समाज से करना पडता है। महिला वर्ग को यह सरकार तथा संविधान से करना पडेगा। महिलाएं अपनी क्षमता के आधार पर समाज व सरकार से अपना प्रतिनिधित्व प्राप्त करने की योग्यता रखती है। अतः उन्हें किसी भी प्रकार के आरक्षण की आवश्यकता नही है। आरक्षण नीति से महिला में हीन भावना आ जाती है, जब कि आधुनिक महिला पूर्ण आत्मविश्वास से अपने अधिकारों की प्राप्ति हेतु संघर्षशील है।

उद्देश्य

शोध अध्ययन को सुचारू रूप से संपादित करने हेतु अध्ययन से निम्नलिखित उद्धेश्य निर्धारित किये गये है:

1. समाज में हिन्दू व मुस्लिम महिलाओं की स्थिति का अध्ययन करना।

समस्या

क्या समाज में हिन्दू व मुस्लिम महिलाओं की स्थिति में अन्तर पाया जाता है?

परिकल्पना

समाज में हिन्दू व मुस्लिम महिलाओं की स्थिति में अन्तर पाया जाता है।

विधि

प्रस्तुत अध्ययन में लखीमपुर शहर में अर्न्तगत हिन्दू और मुस्लिम महिलाओं के संदर्भ में किया गया, इस हेतु 120 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निर्देशन के द्वारा 60 हिन्दू तथा 60 मुस्लिम महिलाओं का चयन किया गया।

शोध डिजाइन

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वे शोध डिजाइन का उपयोग किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण अध्ययन की प्रति को ध्यान में रखकर किया गया।

प्रविधि

औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों प्रकार के साक्षात्कार के माध्यम से तथ्य का संकलन किया गया।

परिणाम एवं व्याख्या

शोध अध्ययन के वर्णात्मक एवं अनुमानिक दोनों प्रकार के साक्षात्कार के माध्यम से अनुसूची में प्रतिक्रिया ली गयी। उन प्रतिक्रियाओं के संख्यात्मक तथ्यों में परिवर्तन करने के पश्चात सांख्यिकी विश्लेषण किया गया।

वर्णात्मक सांख्यिकी टेबल

महिलाएं	माध्य	N	SD
हिन्दू	6.050	60	1.721
मुस्लिम	5.650	60	1.571

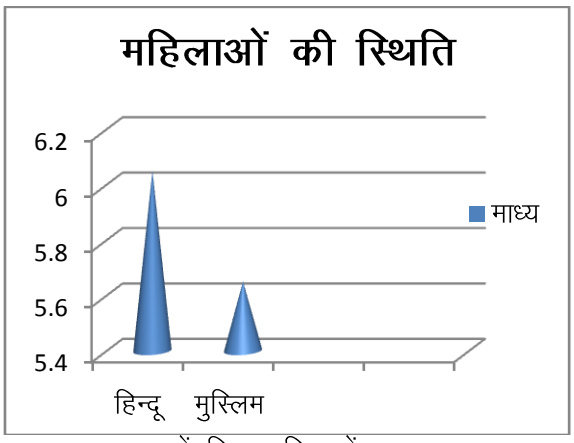

समाज में हिन्दू महिलाओं का माध्य 6.051 एवं मुस्लिम महिलाओं की स्थिति का माध्य 5.650 है।

अनुमानिक सांख्यिकी

समाज में हिन्दू महिलाओं की स्थिति तथा मुस्लिम महिलाओं की स्थिति में अन्तर पाया जाता है। इन उपकल्पना की जांच हेतु स्वतंत्र परिक्षण किया गया।

f	df	सार्थकता (.05 स्तर)
1.329	118	असार्थक

f का मान 1.329 प्राप्त हुआ है, जो स्वतंत्रता की कोटी 118 पर, 05 स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि शोध की उपकल्पना अस्वीत होती है।

डा. राधाकृष्णन 1957, वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम, गांधी इन्दिरा 15जून 1984, लेखिका जंग अनिस, जैन मंजू 1994 ने समस्त शोध अध्ययन म एकरूपता पायी गयी। वर्तमान अध्ययन में हिन्दू और मुस्लिम महिलाओं की स्थिति का पख में हैं। आरक्षण प्राप्ति के बाद महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ, इस तथ्य से हिन्दू महिलाएं अवगत है, महिलाएं दहेज प्रथा की प्रबल विरोधी है, पैतृक सम्पत्ति में पुत्री की भागीदारो के पक्ष में है।

निष्कर्ष

व्याख्यात्मक, अनुमानिक सांख्यिकी के परिणाम के आधार पर स्पष्ट है कि समाज में हिन्दू महिलाओं की स्थिति तथा मुस्लिम महिलाओं की स्थिति में अन्तर नही पाया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

गायत्री, श्री मती वर्मन गायत्री (2005) : किशोरावस्था, द्वितीय संशोधित संस्करण शिक्षा प्रकाशन।

गुप्त रामबाबू (1997) : मानव विकास, द्वितीय संस्करण, रतन प्रकाशन मन्दिर।

कपूर, प्रमिला (1976) : कामकाजी भारतीय नारी, राजपाल एण्ड संस कश्मीरी गेट, नई दिल्ली।

जंग अनीस (1993) : नाइट ऑफ दि न्यू मून।

श्री राधा कृष्ण (1957) : द हिन्दू न्यू ऑफ लाइफ लदन जी आरन एलीन एण्ड अरविन लिमिटेड।

श्रीवास्तव डॉ0 डी. एन. : अनुसन्धान विधियाँ, साहित्य प्रकाशन आगरा।

जैन मंजू (1994) : कार्यशील महिलाएं एवं सामाजिक परिवर्तन, प्रिंटबेल प्रकाशन।